आहार

वैसे तो मुर्गियाँ ग्रामीण परिवेश में अपने आप घूम फिरकर रसोई के अपशिष्ट छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े, हरी पत्तियाँ आदि खा कर अपना पालन पोषण कर लेती है। जिससे उनकी प्रोटीन की आवश्यकता की लगभग पूर्ति हो जाती है फिर भी कुछ मात्रा में दाना देना जिसमें मक्का, ज्वार, जौ कटे हुए चावल, कोद्रा आदि ऊर्जा स्त्रोत के रूप में खिलाना हमेशा फायदेमंद होता है। अण्डे देने वाली मुर्गियों को अच्छे अण्डे के कवच निर्माण हेतु 3-4 ग्रा./मुर्गी/दि के हिसाब से संगमरमर के टुकड़े, सीपी का चूर्ण कैल्शियम की पूर्ति हेतु देना आवश्यक है।

आवास

मुर्गियों को रात्रि में बारिश, परभक्षियों से बचाव हेतु सुरक्षित हवादार आवास की आवश्यकता होती है। उचित आवास व्यवस्था न होने पर इनकी उत्पादन क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। गांव में कृषक इसे बांस, लकड़ी, सूखे पत्ते, मुर्गा जाली, स्थानीय कवेलू एवं एस्बेस्टस शीट आदि की सहायता से दड़बा व मुर्गी घर बना सकते है। इसमें एक छोटा प्रवेश द्वार रखें तथा आवास में बिछावन के लिये धान की भूसी, बुरादा आदि काम में लेना चाहिए ताकि फर्श सूखा रहे और समय-समय पर आवास की सफाई की जानी चाहिए। दड़बा जमीन से थोड़ा उपर छायादार स्थान पर पूरब पश्चिम लम्बाई में बनाना चाहिए ।

स्वास्थ्य प्रबंधन

मुर्गियों का उत्तम स्वास्थ्य अच्छी देखभाल, सामूहिक टीकाकरण, अच्छी शारीरिक वृद्धि अण्डा उत्पादन के लिए आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों मे मुख्य रूप से रानीखेत बीमारी का होना पाया जाता है जिस हेतु नर्मदानिधि तथा साथ में पल रहे अन्य पक्षियों को छह माह के अंतराल में रानीखेत बीमारी का टीका लगाना चाहिए। मुक्त क्षेत्र चारण के कारण आंतरिक परजीवियों हेतु 2 से 3 माह के अंतराल में दवा देना चाहिए। समय-समय पर काक्सीडियोसिस व अन्य बीमारियों से बचाव हेतु दड़बे की सफाई अतिआवश्यक है।

गांवों में अक्सर मुर्गियां परभक्षियों जैसे कुत्ता, बिल्ली, नेवला, सांप, सियार, बाज पक्षी आदि का शिकार बन जाती है। अतः इन्हें सुरक्षित रखने की आवश्यकता है ताकि इनसे होने वाली मृत्युदर को रोका जा सके।

मुर्गीपालक उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए नर्मदानिधि नस्ल की 20-25 मुर्गियों का पालन कर दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकता है।

नर्मदानिधि की दक्षता/उत्पादन क्षमता

आर्थिक गुण		दक्षता
एक दिन के चूजे का औसत वजन		38 ग्रा.
आठ सप्ताह का औसत वजन	चारण	605–765 ग्रा.
	सघन	860–1172 ग्रा.
बीस सप्ताह का शारीरिक भार	चारण मुर्गा	1550 ग्रा.
	मुर्गी	1314 ग्रा.
	सघन मुर्गा	2247 ग्रा.
	मुर्गी	1710 ग्रा.
चालीस सप्ताह का शारीरिक भार	चारण मुर्गा	2310 ग्रा.
	मुर्गी	1650 ग्रा.
	सघन मुर्गा	2650 ग्रा.
	मुर्गी	1860 ग्रा.
यौन परिपक्वता उम्र	सघन	161 दिन
अण्डे का औसत वजन	चारण	48.8 ग्रा.
	सघन	50.2 ग्रा.
मुर्गी का वार्षिक अण्डा उत्पादन	चारण	181 अण्डे
	सघन	223 अण्डे

कहाँ से प्राप्त करें

चूजों तथा फर्टाइल (उर्वरित) अण्डों की उपलब्धता व विस्तृत जानकारी के लिए कुक्कुट विज्ञान विभाग, संयुक्त पशुधन प्रक्षेत्र, अधारताल में संपर्क करें।

डॉ. जे. के. भारद्वाज, विभागाध्यक्ष एवं प्रमुख वैज्ञानिक 09425152138
डॉ आर. पी. नेमा, प्राध्यापक, कुक्कुट विज्ञान विभाग 09425163041

आलेख
डॉ. जे. के. भारद्वाज
विभागाध्यक्ष एवं प्रमुख वैज्ञानिक

डॉ. आर.पी. नेमा
प्राध्यापक

डॉ. एस.एस. अतकरे
सहप्राध्यापक

प्रकाशक:- संचालनालय अनुसंधान सेवायें
नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

अखिल भारतीय समन्वित कुक्कुट प्रजनन अनुसंधान परियोजना
कुक्कुट विज्ञान विभाग
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर

नर्मदानिधि

ग्रामीण, आदिवासी क्षेत्रों, आंगनबाड़ी में मुर्गी पालन हेतु उपयुक्त

ग्रामीण परिवेश, आदिवासी/जनजातीय क्षेत्रों, शहरी झुग्गी झोपड़ियों व आंगनबाडी इत्यादि के कठोर वातावरण में मुर्गियो का पालन मानव जाति द्वारा हजारों वर्षो से किया जा रहा है। ग्रामीण परिदृष्य में मुर्गीपालन प्रबंधन कम से कम भूमि का उपयोग कर आसानी से हो जाता है। क्योंकि ये सहनशील मुर्गी अपना निर्वाह कठिन वातावरण में व्यवस्थित रूप से कर रात्रि होने के पहले ईमानदारी से घर वापिस आकर अण्डे घर पर ही देती है।

गांवों मे मुर्गी पालन खुली चारण या अर्ध सघन पद्धति पर आधारित है। जिसमें मुर्गियां अपना भोजन घर के आसपास मुक्त क्षेत्र मे घूम फिर कर प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार परम्परागत रूप से भूमि हीन मजदूर कृषक, गरीबी रेखा में जीवन यापन करने वाले लोग, कम लागत या बिना लागत के मुर्गी पालन कर अण्डों व कुक्कुट मांस के रूप में आय प्राप्त करते हैं। साथ ही मुर्गी उत्पाद (मांस व अण्डे) से प्रोटीन, विटामिन, सूक्ष्म पोषक तत्व आदि की ग्रामीण आबादी को उनकी पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलती हैं। गाँवों में मुर्गियाँ कीट नियंत्रण करने में सक्षम हैं। इनसे उपयोगी जैविक खाद, सजावट हेतु पंख मुर्गीपालकों को प्राप्त होते है। ग्रामीण इन्हें घर के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिये उपयोग कर रहे है।

भारत देश में देशी मुर्गियाँ, कुल मुर्गियों की जनसंख्या का लगभग 40% है जिनकी वार्षिक अण्डोत्पादन क्षमता 30-60 अण्डे व शारीरिक विकास दर भी कम है। परन्तु देशी अण्डा व कुक्कुट मांस का बाजार मूल्य व्यवसायिक मुर्गियों की तुलना में अधिक होता है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष 180 अण्डे व 11 कि. ग्रा. मांस की प्रतिव्यक्ति वार्षिक खपत की सिफारिश की है। जबकि वर्तमान में मांस की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 2.8 कि. ग्रा. व अण्डे 57 है।

म. प्र. के दस जिलों में आदिवासी जनसंख्या 25 से 50% तथा पांच जिलों में 50% से भी अधिक है। (झाबुआ, धार, बड़वानी, डिण्डोरी 64.8% तथा मण्डला 57.23%)। जहां तक म.प्र. का संबंध है कुल पोल्ट्री आबादी का 62% योगदान ग्रामीण कुक्कुट का है।

इस स्थिति को ध्यान में रखते हुये, कृषकों की आवश्यकता के अनुरूप अखिल भारतीय समन्वित कुक्कुट प्रजनन अनुसंधान परियोजना, कुक्कुट विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा द्विकाजी बहुरंगी संकर नस्ल विकसित की गई है जिसका नाम विश्वविद्यालय द्वारा "नर्मदानिधि" रखा गया है।

नर्मदानिधि की मुख्य विशेषतायें

- इसके पंखों का रंग देशी मुर्गियों के सदृश्य भूरा, काला, चितकबरा, मिश्रित रंगीन तथा दिखने में आकर्षक होती है।
- मजबूत शरीर रचना एवं लम्बी टांगों के कारण भागने में तेज होने से ग्रामीण क्षेत्र में परभक्षी से बचाव करने में सक्षम है।
- ग्रामीण परिवश को आसानी से अपना लेती है, अतः बैकयार्ड एवं छोटे पैमाने पर मुर्गीपालन हेतु अति उपयुक्त है।
- पोषण की कमी एवं ग्रामीण वातावरण में भी बेहतर तरीके से जीवित रहती है।
- इनके अण्डे देशी मुर्गी के समान हल्के भूरे रंग के परन्तु बड़े आकार (50.2 ग्रा.) के स्वादिष्ट होते हैं क्योंकि मुर्गियाँ प्राकृतिक आहार पर निर्भर रहती है।
- मुर्गे मात्र 9 से 10 सप्ताह की उम्र में 1 कि. ग्रा., 20 सप्ताह की उम्र में 1550-2210 ग्रा. तथा मुर्गी 1310 से 1730 ग्रा. वजन प्राप्त कर लेती है।
- ये मुर्गियाँ देशी मुर्गी (45 अण्डे) की तुलना में चार गुना अधिक 181 अण्डे प्रतिवर्ष उत्पादित करती है।
- इस नस्ल में व्याधियों के विरुद्ध उत्तम सहनशीलता है, एवं ग्रामीण वातावरण में पालन हेतु अनुकूल है।

नर्मदानिधि का पालन
नर्मदानिधि के चूजों का रखरखाव एवं प्रबंधन

नवजात चूजों में प्रारंभिक 2 सप्ताह तक ताप नियंत्रण तंत्र विकसित न होने के कारण उन्हें कृत्रिम ऊष्मा देने की नितांत आवश्यकता है। जिसे कृषक चूजों की प्रारंभिक उम्र चार से छह सप्ताह तक आवश्यक शरीर का तापक्रम बनाये रखने के लिये लकड़ी, धातु, टोकरी के बने ब्रूडर के नीचे बल्ब लगाकर या स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से ऊष्मा प्रदान करने हेतु बने ब्रूडर का उपयोग कर इसके नीचे चूजों को रखकर पालन कर सकते है। चूजे लाने के पूर्व चूजा गृह, पानी दाने के बर्तन आदि की पूर्ण रूपेण सफाई कर, जीवाणु नाशक दवा के उपयोग से रोगाणु रहित करके ही उपयोग करें। प्रति 100 चूजों के लिये 60-70 से.मी. लम्बे 3 दाने के बर्तन तथा 2 लिटर पानी की क्षमता वाले 2 बर्तन रखना चाहिये। यह पूरी व्यवस्था 1-6 सप्ताह के चूजों के लिये होती है। चार से छह सप्ताह की उम्र के पश्चात् चूजों को घर के आसपास दिन में मुक्त क्षेत्र में घूम फिरकर भरण पोषण हेतु छोड़ा जा सकता है। रात्रि में घरों का जूठन, अन्य टूटे फूटे दाने, हरी पत्तियाँ आदि दड़बों/चूजा घर में चूजों के आहार के रूप में देना चाहिए।

आहार व्यवस्था

चार से छह सप्ताह के चूजों के लिये उनकी अच्छी बढ़वार हेतु जहां तक हो सके संतुलित आहार प्रदान करना चाहिये। जिसमें खनिज, तत्वों, विटामिन व रोगाणु रोधी (एण्टीबायोटिक) व काक्सीडियल दवाइयों का समावेश होना चाहिये। ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध दाना अवयव जैसे चावल की कनकी, ज्वार, मक्का, बाजरा, कोंदा आदि को ऊर्जा स्त्रोत तथा सोयाबीन, मूंगफली की खली व सूरजमुखी खली को उपयोग कर आहार तैयार किया जा सकता है। कृषक चूजों के पालन हेतु बाजार में उपलब्ध चिक राशन/चूजा आहार दे सकते हैं।

स्वास्थ देखभाल

'नर्मदानिधि' को मुख्य बीमारियों से बचाव के लिये निम्नलिखित सारणी के अनुसार टीकाकरण करना चाहिये:-

आयु (दिन)	टीके का नाम	विभेद (स्ट्रेन)	दवा की मात्रा	विधि/तरीका
1	मरेक्स रोग	एच. वी. टी.	0.2 मिली.	अंतः त्वचा इंजेक्शन
7-10	रानीखेत	एफ-1/बी-1	1 बूंद	आंख या नाक में
14	गम्बोरो/आई. बी. डी.	जीवित गरम/हल्का	1 बूंद	आंख या नाक में
28	रानीखेत	लसोटा	-	पीने के पानी में

ग्रामीण क्षेत्रों में बैकयार्ड/चारण पद्धति (मुक्त क्षेत्र) में पठोरों व अण्डे देने वाली मुर्गियों का प्रबंधन

नर्मदानिधि के चूजों को 4-6 सप्ताह उम्र के पश्चात् मुर्गी पालक उन्हें अपने घर के आगे व पीछे मुक्त क्षेत्र में आसानी से छोड़ सकते है। दिन में ये घूम फिरकर दाना चुगकर अपना भरण पोषण कर लेते है। रात्रि में सुरक्षित स्थान (घर के पिछवाड़े/दड़बा) पर रखा जाता है। क्योंकि यह दोहरे उद्देश की मुर्गियाँ है। इनके मुर्गों को बाजार के अनुसार आवश्यक शारीरिक भार ग्रहण करने के पश्चात् विक्रय कर आय प्राप्त की जा सकती है। सामान्यतः आठ सप्ताह में मुर्गे का वजन चारण पद्धति में 750 ग्रा. अर्धसघन में 860 ग्रा. व सघन प्रबंधन वयस्क मुर्गों का वजन (40 सप्ताह) 2500 ग्रा. तक हो जाता है। नर्मदानिधि की मुर्गियाँ लगभग 50 ग्रा. के भूरे रंग के 175-185 अण्डे प्रति मुर्गी/वर्ष चारण पद्धति में उत्पादित करती है।